70 % विलुप्तप्राय हो चुकी है महसीर

■ **मुंबईः** पर्यावरण को बचाने के लिए जैव विविधता को बरकरार रखना बेहद जरूरी है। सभी जीव जैव विविधता का हिस्सा हैं, इसलिए जरूरी है कि सभी का संतुलन बना रहे। इसी तरह महसीर मछली नदियों की जैव विविधता बचाती है, किन्तु आज यह विलुप्तप्राय है। इसका खत्म होना यानी नदियों के लिए संकट। महाराष्ट्र के लोनावला में टाटा पावर ने अपने हाइडल प्लांट के एक हिस्से में महसीर हैचरी बनाई है, जहां लाखों की संख्या में महसीर पैदा की जाती हैं और इन्हें नदियों में छोड़ा जाता है।

बांध और पावरप्लांट्स ने छीना महसीर का प्राकृतिक वातावरणः टाइगर ऑफ फ्रेश वॉटर और स्पोर्ट्सफिश के नाम से मशहूर ताजा पानी की सबसे बड़ी मछलियों में से एक महसीर पहले भारत की नदियों में भरपूर मात्रा में पाई जाती थी, लेकिन आज इसकी कई प्रजातियां विलुप्त होने की कगार पर हैं।

हाल ही में हुए सर्वे के मुताबिक, महसीर 70% तक विलुप्त हो चुकी है। अगर महसीर इसी तेजी से खत्म होती गई, तो शायद यह एक पीढ़ी से ज्यादा न बच पाए। विलुप्तप्राय महसीर को बचाने के लिए कई राज्यों ने महसीर के व्यवसाय पर प्रतिबंध लगा दिया है। वेस्टर्न घाट में चल रहे बड़े पावर प्रॉजेक्टस के साथ सबसे बड़ी चिंता उनके पर्यावरण को प्रभावित करने को लेकर है। बांध और पावरप्लांट्स ने महसीर का प्राकृतिक वातावरण छीन लिया है, लेकिन अब बिजली बनाने वाली ये प्राइवेट कंपनियां ही महसीर को बचाने की कोशिश में जुटी हैं। पुणे के लोनावला स्थित टाटा पावर का महसीर हैचरी इसका एक उदाहरण है।

महसीर का विलुप्त होना नदियों के लिए संकट

प्राकृतिक रूप से प्रजनन जरूरीः टाटा पावर के महसीर हैचरी के अधिकारी विवेक विश्वासराव के मुताबिक, हर साल 3 से 4 लाख अंगुलिकाएं विकसित की जाती हैं और इन्हें देश के अलग-अलग हिस्सों में भेजा जाता है।

हैचरी ने अब तक महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, राजस्थान, असम, पंजाब और हरियाणा में महसीर अंगुलिकाओं की सप्लाई की है। विश्वासराव हैचरी की इस सफलता से खुश तो हैं, लेकिन उन्हें इसके नदियों में प्राकृतिक रूप से विकसित न हो पाने का दुख भी है। महसीर साफ पानी में प्रजनन करती है, जबकि आज अधिकतर नदियां दूषित हो चुकी हैं। उन्होंने कहा कि सिर्फ ब्रीडिंग के जरिए इनकी संख्या को नहीं बढ़ाया जा सकता। इसके लिए जरूरी है कि ये मछलियां प्राकृतिक रूप से प्रजनन करें, तभी ये विलुप्त होने से बच पाएंगी।

प्रस्तुतिः अभिषेक दुबे